Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

अगस्त/2024 ई

MONTHLY QADIAN

ANSARULLAH

Aug/2024

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

Date of Publication:25-08-2024

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz, Mob: 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beig, Mob: 9915223313

Annual Subscription: Rs: 250/- | Per Issue: Rs: 25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

30.6.2024 को श्री सुल्तान अहमद साहिब नाज़िम की अध्यक्षता में आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला चेन्नई (तमिलनाडु) के स्टेज का दृश्य ।

13,14.7.2024 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला कोइम्बटोर (तमिलनाडु) के इफ़्तिताही इजलास में दुआ करवाते हुए श्री एम ताजुद्दीन साहिब नायब सदर जुनूबी हिन्द।

1.7.2024 को आयोजित सालाना लोकल इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह मुंबई (महाराष्ट्र) में हाज़िर अंसार का ग्रुप फ़ोटो ।

30.6.2024 को श्री सय्यद सुल्तान अहमद साहिब नाज़िम की अध्यक्षता में आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला शिमोगा (कर्णाटक) के स्टेज का दृश्य।

निगरान

अताउल मुजीब लोन

सम्पादक

सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक (हिन्दी)

डाक्टर अब्दुल माजिद

09915279005

मैनेजर

ताहिर अहमद बेग

Ph. +91 99152 23313

प्रेस

फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस

क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 250 ₹

विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान

ऐवाने अन्सार, भारत

क़ादियान - 143516

ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब

फोन : 01872-220186

फैक्स : 01872-224186

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ

سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 22 अगस्त 2024 **Issue -08**

विषय सुचि	पृष्ठ

दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश	3
सम्पादकीय : नमाज़ बाजमाअत और अन्सारुल्लाह के सदस्यों के नेक आदर्श	4
निवेदन - सदर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत जलसा सालाना U.K. में सम्मिलित होने का सौभाग्य	6
सालाना इज्तेमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत में मुक़ाबला तक़ारीर के लिए	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ○ (سورۃ النساء:60)

हे ईमान वालो! तुम अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और रसूल की आज्ञा का पालन करो और अपने शासकों की भी। और यदि तुम किसी मामले में (शासकों) से मतभेद रखते हो तो ऐसे मामले को अल्लाह और रसूल की ओर लौटा दिया करो। यदि (वास्तव में) तुम अल्लाह पर और अंतिम दिन पर ईमान रखते हो तो यह बहुत बेहतर (तरीका) है और परिणाम की दृष्टि से बहुत अच्छा है।

عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : مَنْ اَطَاعَنِيْ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ وَمَنْ عَصَانِيْ فَقَدْ عَصَى اللّٰهَ، وَمَنْ يُّطِعِ الْاَمِيْرَ فَقَدْ اَطَاعَنِيْ وَمَنْ يَعْصِ الْاَمِيْرَ فَقَدْ عَصَانِيْ۔

(مسلم کتاب الامارۃ باب وجوب طاعۃ الامراء فی غیر معصیۃ)

अनुवाद : हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने मेरी आज्ञा का पालन किया उसने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया। जिसने मेरी अवज्ञा की उसने अल्लाह की अवज्ञा की। जिसने शासक की आज्ञा का पालन किया उसने मेरी आज्ञा का पालन किया जो शासक का अवज्ञाकारी है वह मेरा अवज्ञाकारी है।

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

"शिष्टाचार की अवस्था में पूर्णता रखना इमामों के लिए अनिवार्य है"

अब एक आवश्यक प्रश्न यह है कि युग का इमाम किसे कहते हैं और उसके लक्षण क्या हैं तथा उसे अन्य इल्हाम वालों और स्वप्न दृष्टाओं तथा कश्फ़ वालों पर प्रमुखता क्या है। इस प्रश्न का उत्तर यह है कि युग का इमाम उस व्यक्ति का नाम है कि जिसके आध्यात्मिक प्रशिक्षण की ख़ुदा स्वयं ज़िम्मेदारी ले कर उस के स्वभाव में इमामत का एक ऐसा प्रकाश रख देता है कि वह समस्त संसार के तर्कशास्त्रियों और दार्शनिकों से प्रत्येक रूप में शास्त्रार्थ करके उन्हें पराजित कर लेता है, वह हर प्रकार के सूक्ष्म से सूक्ष्म आरोपों का ख़ुदा से शक्ति पाकर ऐसी उत्तम्ता से उत्तर देता है कि अन्ततः स्वीकार करना पड़ता है कि उसका स्वभाव संसार के सुधार का पूरा सामान लेकर इस यात्री-निवास में आया है, इसलिए उसे किसी प्रतिद्वन्द्वी के समक्ष लज्जित नहीं होना पड़ता। वह आध्यात्मिक तौर पर मुहम्मदी सेनाओं का सेनापति होता है और ख़ुदा तआला का इरादा है कि उसके द्वारा धर्म को पुनः विजयी करे और वे समस्त लोग जो उसके झण्डे के नीचे आते हैं उन्हें भी उच्च श्रेणी की शक्तियां दी जाती हैं और सुधार के लिए वे समस्त शर्तें और वे समस्त ज्ञान जो आरोपों के निवारण और इस्लामी गुणों के वर्णन हेतु आवश्यक हैं उसे प्रदान किए जाते हैं इसके बावजूद चूंकि अल्लाह तआला जानता है कि उसे संसार के अनादरों, और अपयशों का भी मुक़ाबला करना पड़ेगा, इसलिए उसे उच्च श्रेणी की नैतिक शक्ति भी प्रदान की जाती है तथा उसके हृदय में प्रजा की सच्ची सहानुभूति होती है। नैतिक शक्ति से यह अभिप्राय नहीं कि वह प्रत्येक स्थान पर अकारण नर्मी करता है क्योंकि यह तो नैतिक नीति के नियम के विपरीत है अपितु अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार अनुदार व्यक्ति प्रतिद्वन्दी और असभ्य की बातों से नितान्त क्रोधित होकर स्वभाव में शीघ्र परिवर्तन पैदा कर लेते हैं और उनके चेहरे पर उस दर्दनाम अज़ाब जिस का नाम प्रकोप है जिसके लक्षण नितान्त घृणित रूप में प्रकट हो जाते हैं तथा उन्माद और अद्विग्नता की बातें सहसा तथा अनुचित मुख से निकलने लग जाती हैं, यह अवस्था नैतिकतापूर्ण लोगों में नहीं होती, हां समय और अवसर के अनुसार कभी उपचार के तौर पर कठोर शब्द भी प्रयोग कर लेते हैं, परन्तु उस प्रयोग के समय न उन का हृदय उन्मादग्रस्त होता है और न उद्विग्नता की अवस्था उत्पन्न होती है, न मुख पर झाग आता है, हाँ कभी कृत्रिम क्रोध की धाक दिखाने के लिए प्रकट कर देते हैं और हृदय आराम और हर्षोल्लास में होता है। यही कारण है कि यद्यपि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने सम्बोधित लोगों के पक्ष में अधिकतर कठोर शब्द प्रयोग किए हैं जैसा कि सुअर, कुत्ते, बेईमान, दुराचारी इत्यादि-इत्यादि, परन्तु हम नहीं कह सकते कि नऊज़ुबिल्लाह आप उत्तम सदाचार से अनभिज्ञ थे क्योंकि वह तो स्वयं सदाचार की शिक्षा देते और नर्मी पर बल देते थे अपितु यह शब्द जो अधिकतर आप के मुँह पर जारी रहते थे ये क्रोध के आवेग और उन्मादपूर्ण आक्रोश से नहीं निकलते थे अपितु ये शब्द नितान्त आराम और शीतल हृदय से यथास्थान चरितार्थ किए जाते थे। अतः नैतिक अवस्था में विशेषता रखना इमामों के लिए आवश्यक है और यदि कोई कठोर शब्द दग्धहृदय और उन्मादपूर्ण आक्रोश से न हो और यथास्थान चरितार्थ और यथोचित हो तो वह नैतिकता के विपरीत नहीं है। यह बात वर्णन योग्य है कि जिन्हें ख़ुदा तआला का हाथ इमाम बनाता है उनके स्वभाव में ही इमामत की शक्ति रखी जाती है और जिस प्रकार ख़ुदाई स्वभाव ने इस आयत के अनुसार أَعْطَى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ प्रत्येक पशु-पक्षी में पहले से वह शक्ति रख दी है जिसके सन्दर्भ में ख़ुदा तआला के ज्ञान में यह था कि उस शक्ति द्वारा उस से काम लेना पड़ेगा इसी प्रकार उन लोगों में जिन के बारे में ख़ुदा तआला के अनादि ज्ञान में यह है कि उन से इमामत का काम लिया जाएगा। इमामत के पद की स्थिति के अनुसार कई आध्यात्मिक प्रकृतियाँ पहले से रखी जाती हैं और जिन योग्यताओं की भविष्य में आवश्यकता होगी उन समस्त योग्यताओं के बीज उनके पवित्र स्वभाव में बोया जाता है। (ज़रूरतुल इमाम, रूहानी खज़ाइन, खंड 13 पृष्ठ 477-478)

★ ★ ★

सम्पादकीय

"नमाज़ बाजमाअत और अन्सारुल्लाह के सदस्यों के नेक आदर्श "

अल्लाह तआला ने इस ज़माने में युग के इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अवतरित कर के एक पाक जमात की स्थापना की है जो दुनिया के लिए नेक आदर्श प्रस्तुत करने वाली हो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"इस सिलसिले से ख़दा तआला ने यही चाहा है और उसने मुझ पर ज़ाहिर किया है कि तक़वा (धर्मपरायणता) कम हो गई है। कुछ तो खुलेआम अनैतिकता में लिप्त हैं और दुराचार और दुष्कर्म का जीवन जीते हैं, और कुछ ऐसे भी हैं जिनके कर्मों में एक प्रकार की अशुद्धता है, लेकिन वे नहीं जानते कि यदि अच्छे भोजन में थोड़ा सा ज़हर मिला दिया जाए तो वह सब ज़हरीला हो जाता है और कुछ ऐसे भी हैं जो छोटे-छोटे (पाप) पाखण्ड आदि में लग जाते हैं जिनकी शाखाएँ अच्छी होती हैं। अब अल्लाह सर्वशक्तिमान ने दुनिया को पवित्रता के जीवन का एक उदाहरण दिखाने का इरादा किया है। इसी उद्देश्य से अल्लाह सर्वशक्तिमान ने इस सिलसिले की स्थापना की है। वह शुद्धता चाहता हैं और उसका उद्देश्य एक शुद्ध जमाअत की स्थापना है।

अंसारुल्लाह के सदस्यों को अपने परिवारों के साथ-साथ जमाअत के इत्फ़ाल और खुद्दाम के लिए भी एक अच्छा उदाहरण स्थापित करना चाहिए।

"अगर हम बाजमाअत नमाज़ को ही ले लें तो हमारी अवस्था बहुत कमज़ोर है। अपितु ओहदेदारों की अवस्था भी बहुत कमज़ोर है। अगर हम अपना जायज़ा लें तो अंसारुल्लाह कहलाने के बावजूद हमारी हालत चिंताजनक है। आप अलैहिस्सलाम जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति से उच्च स्तर चाहते हैं, ताकि वे अंसारुल्लाह कहला कर इस और ध्यान न दें जो ध्यान देने योग्य है। हमारे आदर्श ही युवाओं के लिए भी सही दिशा तय करेंगे। यह हमारे आदर्श हैं जो हमारे बच्चों का मार्गदर्शन करेंगे। हमारे आदर्श ही समाज में बदलाव लाएंगे। हमें अपनी इबादतों के स्तरों को भी देखना होगा। अपने आचरण के स्तरों को भी देखना होगा और फिर सभी ओहदेदारों को प्रत्येक सतह के ओहदेदारों को, एक हल्के ले ओहदेदार से लेकर रीजन के ओहदेदारों से लेकर मर्कज़ी ओहदेदारों तक अपना आकलन करने की आवश्यकता है कि क्या जो अंसारुल्लाह का नाम है क्या हम वास्तव में इस नाम का हक़ पूरा कर रहे हैं? क्या वास्तव में अपना जीवन उसी के अनुसार गुज़ार रहे हैं? अत: प्रत्येक नासिर ये आकलन स्वयं कर सकता है।"
(मज्लिस अंसारुल्लाह यू.के. के जलसा सालाना के अवसर पर 15 सितंबर, 2019 को दिया गया समापन भाषण)

हमारे अंसार बुजुर्गों ने बहुत अच्छे आदर्श स्थापित किए हैं। इसलिए मज्लिस अंसारुल्लाह के पहले सदर हज़रत मौलाना शेर अली साहबरज़ि के नमाज़ पढ़ने की अजीब शान थी। नमाज़ में इस तरह खड़े होते कि दुनिया से बिलकुल बेख़बर हो जाते। जितना संभव हो सके, वह मस्जिद मुबारक में नमाज़ पढ़ने की

कोशिश करते थे। मग़रिब की नामज़ मस्जिद मुबारक में पढ़ कर आते खाना खाते वज़ू करते और फिर नमाज़ के लिए निकल जाते थे। इस रूटीन में गर्मी, सर्दी, बारिश, बादल, बीमारी कोई चीज़ रोक नहीं बन सकती थी। वह घण्टों तक ख़ुदा के सामने नम्रतापूर्वक खड़े रहते थे और इतनी संतुष्टि और ध्यान से वुज़ू करते थे कि अन्य लोग उस दौरान दस बार वुज़ू कर लेते थे।

एक बार एक युवक ने हज़रत चौधरी मुहम्मद ज़फरुल्लाह खान साहबरज़ि से कहा कि यूरोप में फज्र की नमाज़ समय पर अदा करना बहुत मुश्किल है। आपने कहा की मुझे अपना उदाहरण पेश करते हुए अच्छा नहीं लगता लेकिन आपकी तरबियत की खातिर मैं आपको बताता हूं कि ख़ुदा की कृपा से यूरोप में आधी सदी बिताने के बावजूद मैंने फज्र तो फज्र तहज्जुद की नमाज़ भी कभी क़ज़ा नहीं की। बाकी पांच नमाज़ों का भी यही हाल है। (माहनामा खालिद रब्वाह दिसंबर 1985ई० पृष्ठ 89)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें पाँचों नमाज़ों के अलावा तहज्जुद नमाज़ अदा करने में एक नेक आदर्श स्थापित करने का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।

(हाफ़िज़ सय्यद रसूल नियाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya
CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO
All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities
Fort Road
KANNUR-1 (KERALA)
Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS
PRIVATE LIMITED
No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :
MUSADDIQ AHMAD
Mobile : 098451-98560
Tel : +91 (80) 41636612
Web : www.sonetsolutions.in

निवेदन सदर-ए-मज्लिस

जलसा सालाना U.K. में सम्मिलित होने का सौभाग्य

अताउल मुजीब लोन, सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

यह केवल अल्लाह तआला की कृपा है कि मुझे इस साल एक बार फिर जलसा सालाना UK में मर्कज़ी नुमाईंदे के रूप में शामिल होने का अवसर मिला है। इससे पहले 2015 में भी इसमें शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस समय मुझे बैतुल फुतूह हे के पास निवास का अवसर मिला था। इस बार इस्लामाबाद (टीलफोर्ड) के पास ही रहने का प्रबंध था। हमें अपनी निवासगाह से पांच वक्त की नमाज़ों की अदाएगी के लिए मस्जिद मुबारक जाने की सुविधा प्राप्त थी।

हज़रत खलीफतुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ स्वास्थ्य की खराबी के बावजूद पांच वक्त की नमाज़ पढ़ाने के लिए मस्जिद आते रहे और हमें हज़रत अमीरुल मोमिनीन की इमामत में नमाज़ें अदा करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। यह निश्चित रूप से हमारे ईमान में मजबूती का कारण बनता है। क्योंकि खलीफा-इ-वक़्त पूरी दुनिया में अल्लाह तआला के सबसे पसंदीदा और चुने हुए होते हैं। युग के इमाम के समय आत्मिक उत्थान के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"हकीकत यह है कि जब दुनिया में कोई युग का इमाम आता है तो हज़ारों रोशनी उसकी साथ आती है और आसमान में एक खुशी की स्थिति पैदा हो जाती है और आत्मिक प्रकाश और नूर फैलता है और अच्छी क्षमताएँ जागृत हो जाती हैं। तो जो व्यक्ति इलहाम की क्षमता रखता है उसे सिलसिला इलहाम शुरू हो जाता है और जो व्यक्ति विचार और गहराई से धार्मिक ज्ञान की क्षमता रखता है उसकी विचारशीलता और सोचने की शक्ति बढ़ा दी जाती है और जिसे इबादत की ओर झुकाव होता है उसे इबादत और उपासना में आनंद प्राप्त होता है। और जो व्यक्ति दूसरी क़ौमों के साथ बहस करता है उसे तर्क और इतमामे हुज्जत की शक्ति दी जाती है। और ये सभी बातें वास्तव में उसी आत्मिक प्रकाश का परिणाम होती हैं जो युग के इमाम के साथ आसमान से उतरती हैं और हर एक पवित्र दिल पर नाज़िल होती हैं। और यह एक सामान्य क़ानून और इलाही सुन्नत है जो हमें क़ुरआन करीम और सहीह हदीसों के मार्गदर्शन से ज्ञात हुआ है और व्यक्तिगत अनुभव ने इसका अवलोकन कराया है।" (ज़रूरतुल इमाम, रूहानी खज़ाइन, खंड 13 पृष्ठ 474)

सैयदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन की

उपस्थिति की वजह से जलसा सालाना UK 2024 में शामिल होने वाला हर सच्चा अहमदी निश्चित रूप से इस आत्मिक प्रकाश का व्यक्तिगत अनुभव कर सकता है। मुझे सीधे तौर पर जुमे के खुत्बे और भाषण सुनने का मौका मिला। व्यक्तिगत मुलाकात की भी कृपा प्राप्त हुई। वैश्विक बैअत के समय क़ादियान के प्रतिनिधित्व में मुझे सामने बैठने का सम्मान प्राप्त हुआ। सैयदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन के हाथ के नीचे मेरा हाथ भी था। अलहम्दुलिल्लाह।

हज़रत खलीफतुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फरमाते हैं:

"यह दौर... इंशा अल्लाह तआला अहमदियत की तरक्की और विजय का दौर है। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि अल्लाह तआला के समर्थनों के ऐसे दरवाज़े खुले हैं और खुल रहे हैं कि हर आने वाला दिन जमात की विजय के दिनों को करीब करता दिखा रहा है। मैं जब अपनी स्थिति पर नज़र डालता हूँ तो शरमिंदा होता हूँ। मैं तो एक विनीत, अयोग्य व्यक्ति हूँ। मुझे नहीं पता कि अल्लाह तआला ने मुझे इस स्थिति पर क्यों नियुक्त किया उसकी क्या युक्ति थी। लेकिन मैं इस बात को पूरी दूरदर्शिता के साथ कहता हूँ कि अल्लाह तआला इस दौर को अपनी अनंत सहायता और समर्थन से तरक्की की राह पर बढ़ाता चला जाएगा। इंशा अल्लाह। और कोई भी इस दौर में अहमदियत की तरक्की को रोकने वाला नहीं है और भविष्य में भी यह तरक्की रुकने वाली नहीं है। खलीफाओं का सिलसिला चलता रहेगा और अहमदियत का कदम आगे से आगे इंशा अल्लाह बढ़ता रहेगा।" (भाषण 27 मई 2008, अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 25 जुलाई 2008, पृष्ठ 11)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें खिलाफत के वास्तविक सुलतान-ए-नसीर बनने की तौफीक अता फरमाए। आमीन।

(अताउल मुजीब लोन)
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546

Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

सालाना इज्तेमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत में मुक़ाबला तक़ारीर के लिए

(1) खिलाफत-ए-राशिदा

(हाफिज़ शरीफुल हसन नाज़िम इर्शाद वक्फ-ए-जदीद कादियान)

अल्लाह तआला ने सूरत अन्नूर की आयत 56 में नेक काम करने वाले मुसलमानों में खिलाफत कायम करने का वादा किया है। रसूलुल्लाह का एक इर्शाद मुबारक है :

مَا مِنْ نُبُوَّةٍ قَطُّ اِلَّا تَبِعَتْهَا خِلَافَةٌ (कंज़ुल अमाल जिल्द 11 पृष्ठ 259) यानी हर नबुव्वत के बाद खिलाफत होती है।

इसी तरह आप अलैहिस्सलाम ने मुसलमानों को तंबीह करते हुए फ़रमाया था :

عَلَيْكُمْ بِسُنَّتِيْ وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ الْمَهْدِيِّيْنَ تَمَسَّكُوْا بِهَا

(तिरमिज़ी किताबुल इल्म)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी मरज़ुल-मौत में हज़रत अबू बकर[रज़ि] को नमाज़ की इमामत के लिए खड़ा करके मुस्लमानों को इशारा दे दिया था कि अल्लाह तआला हज़रत अबू बकर[रज़ि] को ख़लीफ़ा बनाना चाहता है। और इसी वजह से मुस्लमानों ने उन्हें तर्जीह दी थी। ख़ुदा तआला की ताइदात ने बाद में इस को सच्चा साबित किया। हज़रत अबू बकर[रज़ि] को सानी उसनेन का शरफ़ हासिल है। रसुल्लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के दिन साबित-क़दम रहना, وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (आल-ए-इमरान-145) के हवाला से फ़सीह व बलीग़ ख़ुतबा देकर मुस्लमानों की तसल्ली कराना , बेमिसाल माली क़ुर्बानी वग़ैरा आपके अज़ीमुश्शान फ़ज़ाइल हैं। मुनकरीन-ए-ज़कात से लड़ाई में अल्लाह तआला ने उन्हें फ़तह अता की। इंतिहाई कशीदा हालात में हज़रत उसामा बिन ज़ेद के लश्कर को शाम की तरफ़ हज़रत अबू बकर ने रवाना फ़रमाया मुनकरीन ज़कात और दुश्मनान-ए-इस्लाम पर इस लश्कर की वजह से ख़ौफ़ तारी हुआ। जब इस लश्कर ने रोमीयों को शिकस्त दी तो लोग इस्लाम पर साबित-क़दम हो गए। अबू बकर की ख़िलाफ़त में मुसैलमा कज़्ज़ाब क़तल हुआ। इसी तरह इराक़ भी फ़तह हुआ नीज़ जमउल क़ुरआन का अज़ीम उल-शान कारनामा भी सरअंजाम पाया। फिर हज़रत अमर दूसरे ख़लीफ़ा राशिद हुए। आप के क़बूल-ए-इस्लाम पर मुस्लमानों के नारा तकबीर से पूरा मक्का गूंज उठा था। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप का लक़ब फ़ारूक़ रखा था। आप ने अलल ऐलान हिज्रत की। हज़रत अमर के तीन मश्वरों के मुताबिक़ कुरान-ए-करीम नाज़िल हुआ। आपके ज़माना ख़िलाफ़त में दमिशक़ और क़ैसर व किस्रा की हुकूमतें जैसे बेशुमार फ़ुतूहात हासिल हुईं। नमाज़-ए-तरावीह का आग़ाज़, तक़वीम हिज्री, बैत-उल-माल, रात को गशत लगाना, दफ़्तर का आग़ाज़ हुआ, ज़मीन की पैमाइश, मसला औल, क़ाज़ीयों का तक़र्रुर, मर्दुम-शुमारी कूफ़ा, बस्रा, शाम और मूसल शहरों को आप ने ही आबाद किया। तीसरे ख़लीफ़ा राशिद के तौर पर हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान मुन्तख़ब हुए। आपकी ख़िलाफ़त में मुस्लिम रियासत की सरहदें वसी तर होती चली गईं। आप ने मस्जिद नबवी की तौसीअ व तज़ईन करवाई। चरागाहें रखने का दस्तूर शुरू किया, लोगों को कुरान-ए-करीम की एक करात पर मुत्तफ़िक़ किया, कुरान-ए-करीम के नुस्ख़े तैयार कर के इस्लामी मुमालिक भिजवाए।

हज़रत उसमान की शहादत के बाद हज़रत अली चौथे ख़लीफ़ा राशिद हुए जोकि आँहज़रत के चचा ज़ाद भाई और दामाद थे। एक दुश्मन इस्लाम बादशाह के ख़त के जवाब में हज़रत अमीर मुआवियाह ने उसे जवाब लिखा कि अगर तुम हमला करोगे तो हज़रत अली की तरफ़ से तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ने वाला पहला शख़्स मैं रहूँगा। इस से ज़ाहिर है कि बावजूद इख़तिलाफ़ात के इस्लाम का रोब क़ायम रहा। जब तक मुस्लमानों में ख़िलाफ़त-ए-राशिदा क़ायम रही दीन-ए-इस्लाम को तमकेनत अता हुई। हमेशा मुस्लमानों की ख़ौफ़ की हालत अमन में तबदील होती रही। इस्लामी सलतनत बढ़ती गई। आप की शहादत से ख़िलाफ़त-ए-राशिदा ख़त्म हो गई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"हज़रत अबू बकर ने जो सिदक़ दिखाया उस की नज़ीर मिलनी मुश्किल है ...हज़रत उमर वह वजूद हैं.. जिनकी राय कई मुक़ाम में क़ुरआन के मुवाफ़िक़ हुई.. बाअज़ आदमी शुबा करेंगे कि हज़रत उस्मान ग़नी कहलाते थे उन्होंने क्यों माल जमा किया?...जो माल ख़िदमत-ए-दीन के लिए वक़्फ़ हो वो उस का नहीं।...वो ख़ुदा तआला का माल है...हज़रत अली निहायत मुत्तक़ी थे और उन लोगों में से थे जो ख़ुदाए रहमान के नज़दीक ज़्यादा महबूब होते हैं।"(हमामतुल बुशरा,सिर्रुल ख़लाफ़ा, मलफ़ूज़ात, बहवाला लिबासुत तकवा)

इसी ख़िलाफ़त-ए-राशिदा को अल्लाह तआला एक मर्तबा पर जमाअत-ए-अहमदिया में क़ायम फ़रमाया है। अल्लाह तआला उस ख़िलाफ़त को ता क़यामत क़ायम रखेगा। आमीन

(2)ख़िलाफ़त की एहमीयत वबरकात
(हाफ़िज़ ज़फ़र इक़बाल लोन, ख़ादिम-ए-सिलसिला नासिराबाद, जम्मू कश्मीर)

काबिल-ए-एहतिराम सदर-ए-इजलास और मुअज़्ज़िज़ सामईन! ख़ाकसार की तक़रीर का उनवान ''ख़िलाफ़त की एहमीयत व बरकात'' है। अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम की सूरत नूर आयत 56 में आमाल-ए-सालहा बजा लाने वाले मुमिनीन से ख़िलाफ़त का वाअदा फ़रमाने के बाद ख़िलाफ़त की बरकात का ज़िक्र करते हुए फ़रमाता है। وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا۔ यानी और उन के लिए उन के दीन को, जो इस ने उन के लिए पसंद किया, ज़रूर तमकेनत अता करेगा और उन की ख़ौफ़ की हालत के बाद ज़रूर उन्हें अमन की हालत में बदल देगा।'इस में शर्त ये रखी कि يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْئًا कि वो मेरी इबादत करेंगे। मेरे साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएँगे। फिर ख़िलाफ़त की एहमीयत के ज़िमन में अल्लाह तआला फ़रमाता है। जो उस के बाद भी नाशुक्री करे तो यही वो लोग हैं जो नाफ़रमान हैं। इसी लिए अल्लाह तआला ने यूं ताकीद फ़रमाई है। وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا(आल-ए-इमरान 104) तर्जुमा और अल्लाह की रस्सी (यानी ख़िलाफ़त) को सबसे मज़बूती से पकड़ लो।

हज़रत हुज़ैफ़ा की रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत में दो मर्तबा ख़िलाफ़त के क़ियाम की पेशगोई फ़रमाई है। एक हदीस में ख़िलाफ़त की एहमीयत के बारे में हज़रत हुज़ैफा को ही मुख़ातिब करके रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि फ़रमाते हैं। अगर तू अल्लाह के ख़लीफ़ा को ज़मीन में देखे तो उसे मज़बूती से पकड़ लेना अगरचे तेरा जिस्म नोच दिया जाये और तेरा माल छीन लिया जाये।''(मस्नद अहमद बिन हंबल)

क़िया-ए-ख़िलाफ़त हक़ीक़त में नुबुव्वत के फ़ैज़ान को जारी रखने का ज़रीया है जो नुबुव्वत के इख़ततताम पर इस फ़ैज़ को बढ़ाने और लंबे अर्से पर मुहीत करने के लिए जारी होता है। इसी लिए ख़ुदा तआला की ताईद व नुसरत जिस तरह नुबुव्वत के साथ होती है इसी तरह ख़िलाफ़त के साथ भी होती है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत अबू बकररज़ि की ख़िलाफ़त में यक़ीनन मुस्लमान तमनकत-ए-दीन और ख़ौफ़ के बाद अमन की बरकात से मुतमत्ते हो जाएं। यही वजह है कि हज़रत उमर, हज़रत उस्मान और हज़रत अली के दौर-ए-ख़िलाफ़त में बेशुमार बरकात मुस्लिम उम्मा को हासिल हुए। लेकिन जब ख़िलाफ़त ख़त्म हुई तो ये बरकात मफ़क़ूद हुईं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह अंहो फ़रमाते हैं:

''चाहिए कि तुम्हारी हालत अपने इमाम के हाथ में ऐसी हो जैसे मय्यत ग़स्साल के हाथ में होती है। तुम्हारे तमाम इरादे और ख़्वाहिशें मुर्दा हों और तुम अपने आपको इमाम के साथ ऐसा वाबस्ता करो जैसे गाड़ियां इंजन के साथ।''(अलहकम 24 जनवरी 1903)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

''आप में से हर एक का फ़र्ज़ है कि दुआओं पर बहुत ज़ोर दे और अपने आपको ख़िलाफ़त से वाबस्ता रखे और ये नुक्ता हमेशा याद रखे कि इस की सारी तरक्कियात और कामयाबीयों का राज़ ख़िलाफ़त से वाबस्तगी में ही है। वही शख़्स सिलसिला का मुफ़ीद वजूद बन सकता है जो अपने आप को इमाम से वाबस्ता रखता है। अगर कोई शख़्स इमाम के साथ अपने आपको वाबस्ता न रखे तो ख़ाह दुनिया-भर के उलूम जानता हो उस की कोई भी हैसियत नहीं। जब तक आपकी अक़्लें और तदबीरें ख़िलाफ़त के मातहत रहेंगी और आप अपने इमाम के पीछे पीछे उस के इशारों पर चलते रहेंगे अल्लाह तआला की मदद और नुसरत आपको हासिल रहेगी। (रोज़नामा अलफ़ज़ल 30 मई 2003ई०सफ़ा 2)

हमारी जां ख़िलाफ़त पर फ़िदा है
यह रुहानी मरीज़ों की दवा है
अंधेरा दिल का इस से मिट गया है
यही ज़ुलमात में शम्अ-ए-हुदा है
हिसार-ए-अमन ओ-ईमान-ओ-यक़ीं है
किनार-ए-आफ़ियत हबलु अलमतें है

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अदा अल्लाह तआला बंसरा उल-अज़ीज़ फ़रमाते हैं

''ख़िलाफ़त के निज़ाम के दाइमी रहने के लिए कोशिश करनी है तो फिर जमात के अंदर वो नमूने भी मुस्तक़िल मिज़ाजी से क़ायम रखने पड़ने हैं। तभी वो तरक्कियात भी मिलेंगी जो पहले मिलती रही हैं।''(ख़ुतबा जुमा 25 मई 2018)

पस ए अहमदियत के जांनिसारो! और ख़िलाफ़त अहमदिया के परवानो! अब वक़्त आ गया है कि हम अपने सारे अहदो पैमान वाक़ई सच्च कर दिखाएं। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

(3)हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह अलाव्वलओ और इस्तिहकाम-ए-ख़िलाफ़त

(ऐच शम्सुद्दीन,क़ाइद तर्बीयत मजलिस अंसार अल्लाह भारत

काबिल-ए-एहतिराम सदर-ए-इजलास और मुअज़्ज़िज़ सामईन! ख़ाकसार की तक़रीर का उनवान "हज़रत ख़लीफ़ तुल मसीह अव्वल और इस्तिहकाम-ए-ख़िलाफ़त" है। अल्लाह तआला ने वक़्त-ए-मुक़र्ररा पर हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम को मसीह मौऊद बनाकर मबऊस फ़रमाया । जिनके मुताल्लिक़ ख़ुद नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि आप अलैहिस्सलाम नबीयुल्लाह भी होंगे। आपके बाद क़ुरून ऊला की तरह अल्लाह तआला ने फिर से ख़िलाफ़ अला मिनहाज-ए-नुबुव्वत क़ायम फ़रमाया और सहाबा किराम ने बिलइत्तिफ़ाक़ हज़रत मौलाना हकीम नूर उद्दीन साहिबरज़ि को ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल मुन्तखिब किया।

सामईन 1400 साल बाद मुमिनीन के लिए ख़िलाफ़त अला मिनहाज-ए-नुबुव्वत का ये पहला तजुर्बा था। हज़रत अबू बकर के ज़माने की तरह यहां पर भी ख़िलाफ़त के ख़िलाफ़ इबलीसी ताक़तों ने अपनी ज़ोर-आज़माई से ख़िलाफ़त को ख़त्म करने की हर मुम्किन कोशिश की। लेकिन ख़िलाफ़त हक़्क़ा को अल्लाह तआला ने हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल के ज़रीया इस तरह से इस्तिहकाम बख़्शा कि आपकी फ़िरासत और रहनुमाई के तुफ़ैल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तैयार करदा ये कश्ती नूह हर भंवर से महफ़ूज़ रही।

आईए अब हम इस सिलसिला में आपके नाक़ाबिल-ए-तसख़ीर कारनामों पर एक ताइराना नज़र डालते हैं।

हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह अंहो के दौर में इनकार-ए-ख़िलाफ़त का अलम-ए-बग़ावत बुलंद करने वालों ने इंतिख़ाब ख़िलाफ़त औला के चंद दिनों के बाद ही ख़लीफ़ा वक़्त के इख़्तयारात महिदूद करने की साज़िशें शुरू कर दी और जलसा सालाना 1908 पर बाअज़ मैंबरान ने अपनी तक़रीरों में वाज़िह अलफ़ाज़ में ख़िलाफ़त के बजाय सदर अंजुमन अहमदिया को हज़रत मसीह मौऊद क़रार देने की हर मुमकिन कोशिश की।

हुज़ूर अनवर के रूह-परवर ख़िताब से इस मौक़ा पर अक्सर अहबाब के दिल साफ़ हो गए और ख़लीफ़ा की एहमीयत व अज़मत को बख़ूबी समझ गए। ख़िताब के बाद आप ने ख़्वाजा साहिब और मौलवी मुहम्मद अली साहिब को दुबारा बैअत करने की हिदायत फ़रमाई। चुनांचे इन दोनों से बैअत ली गई। लेकिन मुनकरीन ख़िलाफ़त अपनी कज रवी से बाज़ नहीं आए। चुनांचे सदर अंजुमन के मुआमलात में ख़लीफ़ तुल-मसीह की बजाय मीर मजलिस यानी प्रैज़ीडैंट का लफ़्ज़ इस्तिमाल करने लगे। जिसका मक़सद ये था सदर अंजुमन के रिकार्ड से ये साबित न हो कि ख़लीफ़ा अंजुमन का हाकिम है। इस पर हुज़ूर ने हज़रत मिर्ज़ा बशीर-उद-दीन महमूद अहमद रज़ी अल्लाह अंहो को मौरख़ा 2 दिसंबर 1910 से मीर मजलिस मुक़र्रर फ़रमाया।

मुनकरीन ख़िलाफ़त ने हुज़ूर अक़्दस पर 8 किस्म के घिनौने इल्ज़ामात लगाए यानी अमिरीयत का इल्ज़ाम। पहले इमाम से इख़तिलाफ़ का इल्ज़ाम। क़ौमी अम्वाल में ग़लत तसर्रुफ़ का इल्ज़ाम। अपने पसंदीदा आदमीयों को मुसल्लत करने का इल्ज़ाम। बुढ़ापा और जिस्मानी कमज़ोरी के बाइस ना एहली का इल्ज़ाम। और एतराज़ किया गया कि हक़, हक़दार को नहीं मिला बल्कि कमतर शख़्स को इख़तियार दे दिया गया है नीज़ जुज़ई फ़ज़ीलत की बहसें और ख़लीफ़ा वक़्त की ग़लतियों की निशानदेही और उनके चर्चे भी शुरू दिए।

(माख़ूज़ अज़ सवानिह फ़ज़ल-ए-उमर जिल्द अव्वल, मुसन्निफ़ा हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह राबे रहिमाहुल्लाह)

आप ने बसीरत अफ़रोज़ ख़िताब में फ़रमाया।"मैं ख़लीफ़तुल-मसीह हूँ। और ख़ुदा ने मुझे बनाया है... ख़ुदा तआला के बनाए हुए ख़लीफ़ा को कोई ताक़त माज़ूल नहीं कर सकती।' (तारीख़-ए-अहमादियत जिल्द 3 सफ़ा 385 ता 386)

इस ज़िमन में हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अलख़ामस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं। "अल्लाह तआला ने दुश्मन की ये तमाम अंदरूनी और बैरूनी जो भी तदबीरें थीं उनको कामयाब नहीं होने दिया और अंदरूनी फ़ित्ने को भी दबा दिया और दुनिया ने देखा कि किस तरह हर मौक़ा पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ने इस फ़ित्ना को दबाया और कितने ज़ोर और शिद्दत से इस को दबाया और किस तरह दुश्मन का मुँह-बंद किया।" (ख़ुतबा जुमा 21 मई 2004)

दुआ है कि अल्लाह तआला हम सब को इस्तिहकाम-ए-ख़िलाफ़त के लिए हतलवसा ख़िदमात पेश करने की तौफ़ीक़ अता करे आमीन।

★ ★ ★

29.6.2024 को श्री सय्यद सुल्तान अहमद साहिब नाज़िम की अध्यक्षता में आयोजित सालाना लोकल इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह शिमोगा (कर्णाटक) के स्टेज का दृश्य।

25.6.2024 को श्री एम नासिर अहमद साहिब नाइब सदर अंसारुल्लाह की अध्यक्षता में आयोजित तरबियत रिफ्रेशर क्लास ज़िला कोइम्बटोर (तिमलनाडु) के स्टेज का दृश्य ।

2.7.2024 को आयोजित ब्लड डोनेशन में भाग लेते हुए मज्लिस अंसारुल्लाह क़ादियान के अंसार का एक दृश्य ।

6.7.2024 को आयोजित सालाना इज्तिमा अंसारुल्लाह ज़िला राजोरी (जम्मू कश्मीर) के अवसर पर भाषण देते हुए श्री लुक़मान अहमद भट्टी साहिब नाईब सदर शिमाली हिन्द ।

3.5.2024 को मज्लिस अंसारुल्लाह चेक दीसेंड (कश्मीर) की तरफ़ से आयोजित वक़ारे अमल का एक दृश्य ।

30.6.2024 को आयोजित सालाना लोकल इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह सागर (कर्णाटक) में शामिल अफ़राद का दृश्य ।